अध्याय-5

प्रारंभिक शहर : प्रथम नगरीकरण

चौपाल

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गाँव के चौपाल में रहमान और राजीव

रहमान और राजीव गाँव के चौपाल में बैठे हुए थे। गाँव के लोग अपने देश के बारे में चर्चा कर रहे थे। एक ने कहा कि भारतीय संस्कृति काफी पुरानी है। दूसरे ने कहा कि अंग्रेजों ने हमें सभ्य बनाया। इस पर तीसरे व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति के विचारों का जोरदार विरोध किया और कहा कि भारतीय सभ्यता दुनिया की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। रहमान और राजीव एक दूसरे से कहने लगे कि भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यता का क्या मतलब होता है?

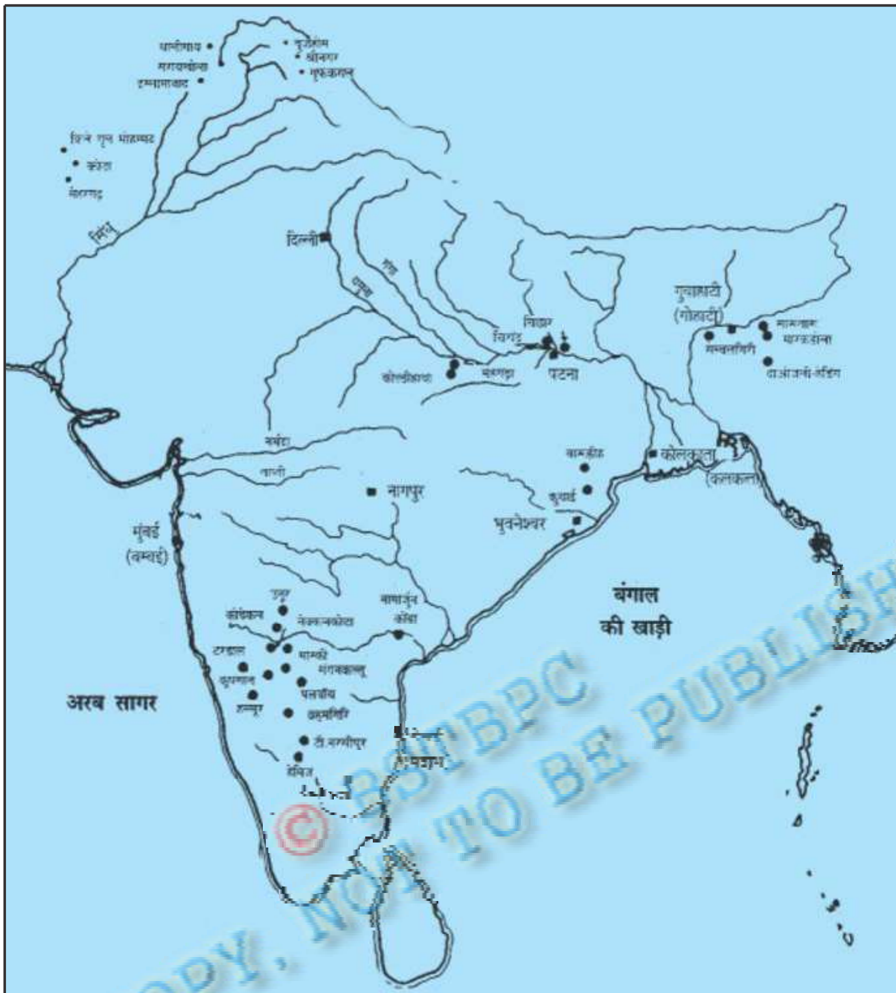

© BSTBPC
NEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

नवापाषाण युगीन स्थल का मानचित्र

धातु युग क्या है?

नवपाषण काल के बाद धातु युग का आरम्भ हुआ। जिसमें मानव ने धातु का इस्तेमाल शुरू किया। धातु युग में ही आगे चलकर सिन्ध में कोटदीजी और अमरी, उत्तरी पंजाब में सराईखेला और जलीलपुर एवं राजस्थान में कालीबंगा जैसे स्थलों का विकास हुआ। इन स्थलों पर कृषि उत्पादन बड़े पैमाने पर होने लगा, रंगे हुए मिट्टी के बर्त्तन का इस्तेमाल होने लगा, लोग लम्बी दूरी का व्यापार करने लगे, और पकी ईंट के बने घरों में रहने लगे, जिसकी चारों तरफ से किलेबंदी भी की गई थी।

धातु युग का आरंभ नवपाषाण काल के अंतिम चरण में हुआ, पहला धातु तांबा था जिसे नदी की तलहटी से प्राप्त किया जाता था। इस समय भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में कई ग्रामीण संस्कृति उदित हुई। इन संस्कृतियों के लोग बड़े पैमाने पर कृषि उत्पादन करने लगे थे। आप पिछले अध्याय में खेती की शुरूआत की परिस्थिति से परिचित हुए होंगे। ये संस्कृतियाँ अपनी विशिष्ट मिट्टी के बर्तन के लिए भी प्रसिद्ध थीं। इस समय की बस्तियाँ आमतौर पर छोटी होती थीं और इनमें बड़े आकार की बस्तियाँ नहीं के बराबर थीं।इन संस्कृतियों से जुड़ी कृषि पशुपालन तथा शिल्प के साक्ष्य मिले हैं।

मानव संस्कृति सभ्यावस्था में कैसे प्रवेश करती है

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को सम्यवस्था में प्रवेश करने के लिए कुछ मापदंडों को पूरा करना होता है। जैसे वह क्षेत्र शहर में तब्दील हो गया हो लेखन कला विकसित हो गई हो, शहरी आबादी के पालन–पोषण के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से जरूरी चीजों की पूर्ति होती हो, लंबी दूरी का व्यापार होता हो और कारीगरी कलाकारी तथा विज्ञान आदि का विकास हो गया हो। हड़प्पा संस्कृति इन सभी मानदंडों को पूरा करती थी। नवपाषाण युग के बाद विश्व के कई हिस्सों में मानवीय संस्कृति ने सभ्यावस्था में प्रवेश किया जैसे भारत में हड़प्पा सभ्यता, इराक में मेसोपोटामिया की सभ्यता, मिस्र की सभ्यता, चीन की शांग सभ्यता।

संस्कृति–समाज में प्रचलित रीति–रिवाज खान–पान, वेश–भूषा, रहन–सहन, धार्मिक संस्कार आर्थिक क्रियाकलाप के तौर तरीके कला कौशल के विविध रूप, भाषा एवं साहित्य की शैली आदि परंपराएँ जो पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही हो उसे ही संस्कृति कहते हैं। इस प्रकार संस्कृति से तात्पर्य व्यक्ति के परिष्कृत व्यवहार से है, जिसे समाज द्वारा सीखा जाता एवं इसका हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक होता रहता है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

हड़प्पा सभ्यता की खोज

लगभग 150 साल पहले पश्चिमी पंजाब में रेलवे लाइन बिछाने के क्रम में हड़प्पा पुरास्थल के खंडहर का पता चला। इस खंडहर के महत्व को नहीं समझ पाने के कारण रेलवे ठेकेदारों ने हड़प्पा खंडहर के ईंटों का इस्तेमाल रेलवे निर्माण में किया। इस अज्ञानता के कारण हड़प्पा की कई इमारतें नष्ट हो गईं। सन् 1921 ई॰ में पुरातत्वविदों ने इस स्थल का व्यवस्थित उत्खनन किया। तब जाकर पता चला कि खंडहर उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक है। इसके बाद पुरातत्विदों ने अनेक नगरों का पता लगाया जिनमें मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, बनावली, लोथल और धौलावीरा प्रमुख है। पुराविदों ने लगभग 2800 हड़प्पा स्थल का पता लगाया है। चूँकि हड़प्पा नगर की खोज सबसे पहले हुई थी, इसलिए उपमहाद्वीप में हड़प्पा के समकालीन पाए जाने वाले सभी शहरों को हड़प्पा सभ्यता के शहर के नाम से जाना जाता है। इन सभी स्थलों से पुरातत्वविदों को अनेक महत्वपूर्ण वस्तुएं मिली हैं। जैसे–मुहरें, मनके, माप-तौल के बाट, कांसे के बने उपकरण, मिट्टी के बने बर्त्तन जिनपर काले रंग के चित्र बने थे। इन स्थलों से मूर्तियां भी मिली हैं।

© BSTBPC
WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

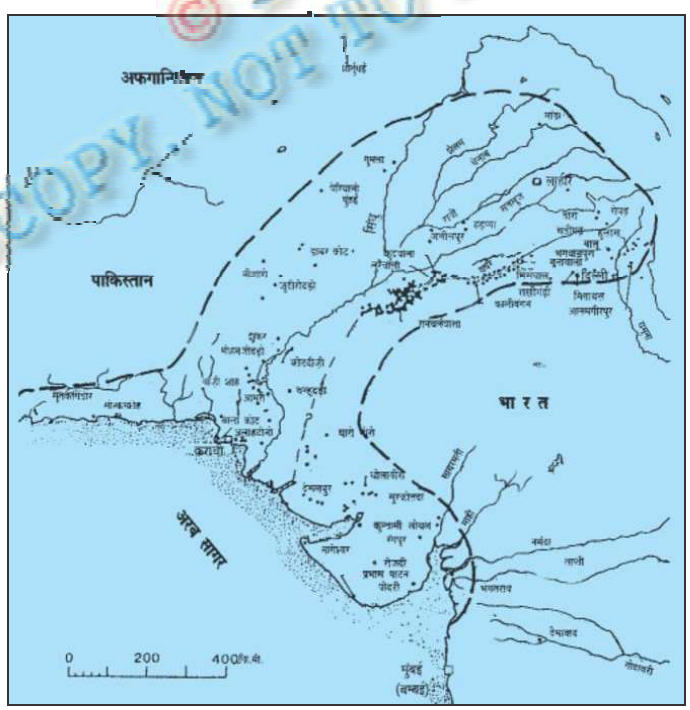

मानचित्र हड़प्पा सभ्यता के विस्तार क्षेत्र

हड़प्पा नगरों की स्थिति

नगर	खोजकर्त्ता	वर्ष	नदी तट
हड़प्पा	दयाराम साहनी	1921 ई॰	रावी
मोहनजोदड़ो	राखालदास बनर्जी	1922 ई॰	सिंधु
कालीबंगा	ब्रजवासी लाल	1961 ई॰	घग्गर
लोथल	रंगनाथ राव	1954 ई॰	भोगवा
धौलावीरा	आर॰ एस॰ बिस्ट	1989–90	
चन्हूदड़ो	गोपाल मजूमदार	1931	सिंधु
रंगपुर	माधोस्वरूप वत्स	1931–53	सादर

हड़प्पा सभ्यता के नगरों की विशेषता क्या थी

हड़प्पा सभ्यता के अधिकांश नगर दो हिस्सों में विभाजित थे। नगर का पश्चिमी

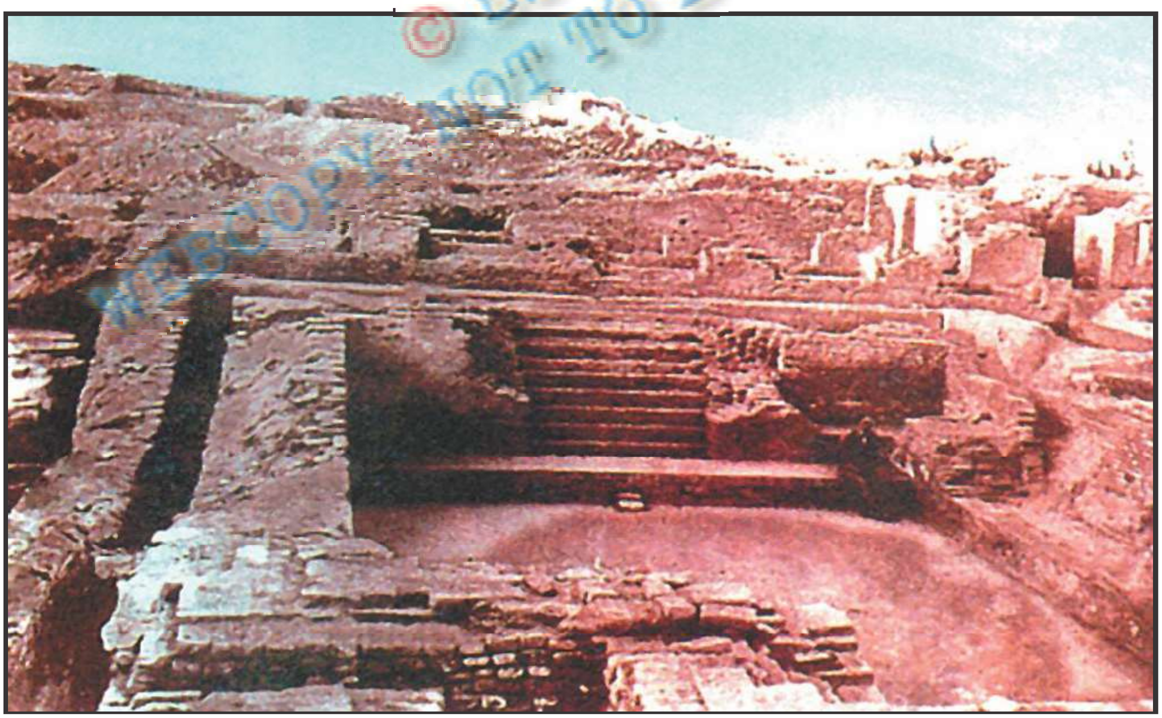

महास्नानागार मोहनजोदड़ें में स्थित

© BSTBPC WEBCOPY - NOT TO BE PUBLISHED

हिस्सा छोटा परन्तु ऊँची जगहों पर बसा था जबकि पूर्वी हिस्सा बड़ा परन्तु निचले इलाकों में बसा था। ऊँची जगहों पर बसे छोटे हिस्सों को पुरातत्वविदों ने नगर दुर्ग कहा है और निचले इलाकों को निचला नगर कहा है। माना जाता है कि नगर दुर्ग में शहर के सुखी सम्पन्न लोग रहते थे जबकि निचले नगर में साधारण लोग रहते थे। नगर की चाहरदिवारियों का निर्माण ईंटों से की गई है। ईंटों के निर्माण एवं दीवार बनाने के लिए ईंटों की चिकनाई में उच्च तकनीक का प्रयोग किया जाता था, तभी तो हजारों साल बाद भी दीवारें मजबूती से खड़ी रह सकीं।

कुछ नगरों के दुर्ग वाले हिस्से में बड़ी इमारतें और आवासीय ढाँचे मिले हैं। इन इमारतों के नक्शे एवं निर्माण के तरीके विशिष्ट प्रकार के थे। मोहनजोदड़ों में एक तालाब मिला है जिसे पुरातत्वविदों ने महास्नानागार कहा है। तालाब के दोनों सिरों तक सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। तालाब का फर्श तराशी गई ईंटों से बना है। इसमें पानी का रिसाव रोकने के लिए प्लास्टर के ऊपर चारकोल की परत चढ़ाई गई है। तालाब के पास ही एक कुआँ मिला है। स्नानागार में पानी इसी कुएँ से निकालकर भरा जाता था। स्नानागार में पानी निकालने की भी व्यवस्था थी। स्नानागार के चारों तरफ कमरे बने हुए थे। ऐसा माना जाता है कि यहाँ विशिष्ट नागरिक विशेष अवसरों पर स्नान किया करते थे।

© DSIRPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

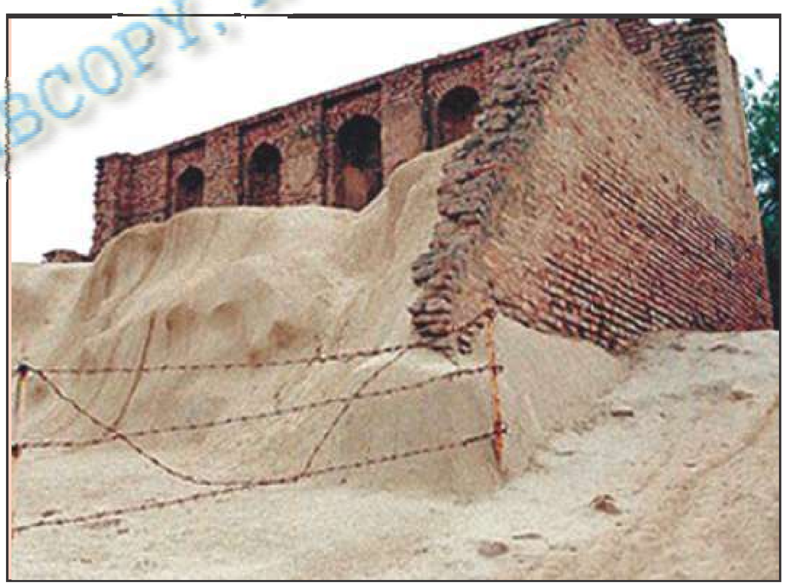

हड़प्पा का अन्नागार

मोहनजोदड़ो, हड़प्पा कालीबंगा और लोथल में एक समान विशेषताओं वाली संरचनाएँ मिली हैं, इन संरचनाओं को अन्नागार या कोठार के रूप में पहचाना गया है। इसी तरह कालीबंगा और लोथल जैसे नगरों में अग्निकुण्ड मिले हैं। संभवतः इसका इस्तेमाल यज्ञ के लिए किया जाता था।

नगरीकरण का अर्थ

नगरीकरण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से नगरीय जीवन पद्धति का विकास होता है। नगरीय जीवन पद्धति से तात्पर्य नगर में निवास करने वाले लोगों के वस्त्र, आभूषण, खान–पान, बातचीत, संबंध व्यवहार पेशा इत्यादि से है। नगरीकरण की प्रक्रिया में एक नगरीय समुदाय अस्तित्व में आता है। इस समुदाय के पास सुख–सुविधा के सभी आधुनिक साधन होते हैं। यहाँ यातायात एवं संदेश वाहक व्यवस्था विकसित होती है। शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा, इत्यादि से संबंधित अनेक संस्थाएँ होती हैं। आधुनिक साधन तथा बहुमंजिली इमारतें इसकी विशिष्टता होती है। जगह–जगह आवासीय कॉलोनी होती है। जल आपूर्ति, बिजली–आपूर्ति, सफाई, यातायात इत्यादि की देखरेख प्रशासन द्वारा की जाती है। नगरीकरण की प्रक्रिया में गाँव अपना स्वरूप खो देता है और वहाँ कृषि कार्य नहीं होता। जरूरी खाद्य सामग्रियों की आपूर्ति खेतिहर इलाकों से होने लगती है। भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया हड़प्पा संस्कृति के समय से शुरू हुई जो आज भी जारी है। भारत की लगभग 28 प्रतिशत जनसंख्या का नगरीकरण हो गया है।

इमारत, सड़कें और नालियाँ

हड़प्पाई नगरों के घर प्रायः एक या दो मंजिले और कुछ तीन मंजिले भी होते थे। प्रत्येक घर में एक आंगन होता था और उसके चारों ओर कमरे बने होते थे। मकानों के दरवाजे और खिड़कियाँ मुख्य सड़कों की बजाए गली में खुलते थे। अधिकतर घरों में एक स्नानागार होता था, घरों में कुएँ भी पाए गए हैं।

नगरों में सुव्यवस्थित सड़कें और नालियाँ बनी हुई थीं और इनके साथ–साथ जल की निकासी के लिए नालियों का भी उचित प्रबंध किया गया था। नगर योजनाबद्ध तरीके से बसाए गए थे जिसकी गलियाँ तथा सड़कें एक दूसरे को लगभग समकोण पर काटती थीं। इस तकनीक की वजह से शहर कई आयताकार खंडों में विभाजित हो जाता था। जल निकासी की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। घरों से निकलने वाले मल–जल पास की गली में बनी हुई मध्यम आकार की निकास नालियों तक पहुँचते थे। मध्यम आकार वाली नालियाँ बड़ी सड़कों के साथ–साथ बने हुए बड़े नालों में मिलती थी। नाले ईंटों से ढँके होते थे। बड़े नालों में जगह जगह पर आयताकार गड्ढे बने होते थे जिनमें गंदगी इकट्ठी होती रहती थी। गंदगी को एक निश्चित समय पर साफ किया जाता था। इससे पता चलता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग स्वास्थ्य तथा सफाई के प्रति कितने जागरूक थे।

कुआँ का चित्र

मोहनजोदड़ो की सड़क

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

नगरीय जीवन

हड़प्पाई नगरों में पाई गई आवासीय इमारतें, सड़कें, गलियों एवं नालियों की सुनियोजित व्वस्था इस तथ्य को उजागर करती है कि हड़प्पा के शहरों की योजना में कुशल शासक वर्ग का हाथ रहा होगा। यह भी संभव है कि शासक शहर के लिए जरूरी धातुओं बहुमूल्य पत्थर एवं अन्य उपयोगी चीजों को मँगवाने के लिए लोगों को दूर–दूर के प्रदेशों में भेजते होंगे। नगर निर्माण में ईंटों के उपयोग से स्पष्ट होता है कि लोग व्यापक पैमाने पर ईंटें बनाने का काम करते होंगे। इन नगरों में लिपिक भी होते थे जो भोजपत्र या कपड़े पर लेखन–कार्य करते थे, जो अब नष्ट हो चुके हैं। उनके द्वारा मुहरों, हाथी–दांत आदि पर लिखे अभिलेख प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा नगरों में सोनार, पत्थर काटने वाले, बुनकर, नाव–निर्माता जैसे शिल्पकार (स्त्री–पुरूष) भी रहते थे जो अपने घरों या निर्माण–स्थल पर तरह–तरह की चीजें बनाते थे।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

हड़प्पाई नगरों के निवासी सूती वस्त्रों तथा गरम कपड़ों का उपयोग करते थे। स्त्री–पुरूष हार बाजूबन्द, अंगूठी, चूड़ी, कमरबन्द, कान की बाली तथा पायल जैसे गहने पहनते थे। इनके निर्माण में सामान्यतः सोना–चाँदी, हाथी–दाँत तथा ताम्बों का प्रयोग होता था। गहनों के निर्माण में गोमेद, स्फटिक, जैसे बहुमूल्य पत्थरों का भी इस्तेमाल किया जाता था। लोग चाक पर निर्मित आग में पके हुए मिट्टी के सादा तथा चित्रकारी वाले बर्त्तन का इस्तेमाल करते थे। ताम्बा, कांस्य, चाँदी तथा चीनी–मिट्टी के बर्त्तनों का भी उनके द्वारा उपयोग किया जाता था। सख्त पत्थरों से नाप–तौल के लिए बाट तथा गहने के तौर पर इस्तेमाल के लिए मनके का निर्माण किया जाता था।

आभूषण

बच्चों के खिलौनों में छोटे चक्के वाली बैलगाड़ियाँ, पशुमूर्तियाँ आदि प्रमुख रूप से बनायी जाती थी। लोग पासे का खेल भी खेलते थे।

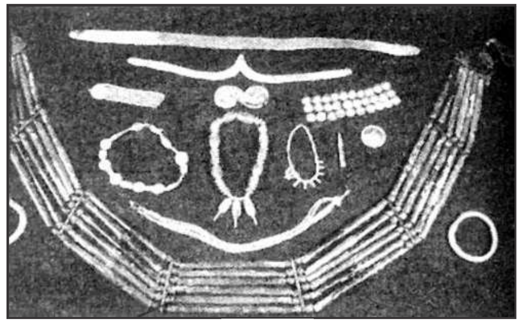

आभूषण

मुहरें : हड़प्पा सभ्यता के विशिष्ट लक्षण

हड़प्पाई शिल्पकला में शिल्पकारों द्वारा पत्थर की बनी मुहरें महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। मुहरों का प्रयोग संभवतः धनी लोग अपनी निजी संपत्ति को चिह्नित करने और पहचानने के लिए करते थे। हड़प्पाई मुहरें अपनी दो महत्त्वपूर्ण विशेषताओं के लिए जानी जाती हैं। प्रथम, इसपर जानवरों की सुन्दर कलाकृतियाँ मिलती हैं। और दूसरी, इस पर कुछ लिखा होता था। मुहरों पर लिखे अधिकांश लेखों में दो से चार शब्द ही पाए गए हैं। इस तरह हड़प्पाई लोगों ने

हड़प्पाई मुहर

BSTBPC WEBCOPY : NOT TO BE PUBLISHED

हड़प्पाई लोगों का आर्थिक जीवन कैसा था?

हड़प्पाई नगर गाँवों से घिरा होता था। गाँव के लोग ही शहर में रहने वाले लोगों के लिए खाने का सामान उपलब्ध कराते थे। ठीक वैसे ही जैसे आज के शहरों की खाद्य-सामग्री गाँव वाले उपलब्ध कराते हैं। हड़प्पाई लोग गेहूँ, जौ, मटर, धान, तिल और सरसों से परिचित थे। खेती जमीन को खोदकर तथा हल से भी की जाती थी। सिंचाई कुओं एवं नदियों पर बांध

बनाकर की जाती थी। खेती के अलावा हड़प्पाई लोग पशुपालन भी करते थे। गाय, भैंस, भेड़ और बकरियाँ मुख्य पालतू पशु थे। भोजन प्राप्त करने के अन्य साधन के रूप में खाद्य संग्रहण एवं शिकार भी चलता रहा।

हड़प्पा संस्कृति में व्यापार का बड़ा महत्त्व था। यह व्यापार हड़प्पा सभ्यता के भीतरी एवं बाहरी क्षेत्र से भी होता था। लेकिन वस्तुओं के निर्माण के लिए आवश्यक कच्चे माल की उपलब्धता हड़प्पाई नगरों में अपर्याप्त थी। इसीलिए हड़प्पाई सभ्यता के लोग राजस्थान (खेतड़ी) से तांबा, कर्नाटक (कोलार) से सोना, अफगानिस्तान एवं ईरान से चाँदी, अफगानिस्तान (बदख्शां) से वैदूर्यमणि, मध्य एशिया से फिरोजा गुजरात से समुद्री उत्पाद, जम्मू से लकड़ी आदि प्राप्त करते थे। मेसोपोटामियाई अभिलेखों में मेलुहा की चर्चा मिलती है। मेलुहा सिंधु क्षेत्र का प्राचीन नाम है। इससे स्पष्ट होता है कि हड़प्पा सभ्यता का व्यापारिक संबंध मेसोपोटामियाई सभ्यता से था।

©BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

नगरवासियों का धार्मिक जीवन :

हड़पाई लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे और उनमें मातृदेवी की पूजा का खूब प्रचलन था। हड़प्पा में पकी हुई मिट्टी की स्त्री -मूर्तियाँ भारी संख्या में मिली हैं। एक मुहर पर पुरुष देवता का भी चित्र मिला है। चित्रित देवता का सम्बन्ध पशुपति महादेव से स्थापित किया गया है। इसी तरह हड़प्पा वासी वृक्ष और पशु की पूजा करते थे। उनके बीच एक सींग वाला जानवर जो गेंडा हो सकता है, का विशेष महत्त्व था। उसके बाद कूबड़ वाला साँड़ महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था। हालांकि मातृदेवी, पुरुष देवता अथवा पशु–पूजा के अतिरिक्त किसी मंदिर का साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता में नहीं मिला है। हड़प्पाई लोग संभवतः भूत–प्रेत और जादू–टोना पर विश्वास करते थे। इसीलिए

पशुपति मुहर

उनसे बचने के लिए तावीज पहनते थे। हड़प्पाई लोग मृतकों को दफनाते एवं जलाते भी थे।

सूक्ष्म निरीक्षण

धौलावीरा :

धौलावीरा गुजरात के उत्तर–पश्चिमी कोने में बसा था। धौलावीरा हड़प्पाई शहरों में दो कारणों से महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रथम संपूर्ण शहर तीन भागों में बँटा हुआ था–गढ़ी, मध्यनगर और निचला नगर। इसमें गढ़ी और मध्यनगर की अपनी–अपनी किलेबंदी थी जबकि निचला नगर किलेबंद नहीं था। गढ़ी और मध्यनगर किलबंद होते हुए भी आपस में जुड़े हुए थे। गढ़ी और मध्यनगर में खूब चौड़ा और खुला मैदान बना हुआ था। ऐसा लगता है कि यह खुला मैदान राजकीय, सामाजिक, धार्मिक सभाओं, उत्सवों या समारोहों के लिए इस्तेमाल किया जाता होगा। दूसरे, यहाँ से एक ऐसे शिलालेख की प्राप्ति हुई है जिसपर बड़े अक्षर अंकित किए गए हैं। प्रत्येक अक्षर को दूध जैसे सफेद पत्थर के टुकड़ों को मिलाकर धातु या स्फटिक चूर्ण की लेई की मदद से बनाया गया है।

लोथल :

लोथल खंभात की खाड़ी के निकट अहमदनगर से 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक हड़प्पाई नगर था। शहर की किलेबंदी की गई थी। किले के भीतर निजी और सार्वजनिक दोनों प्रकार के घर थे। गोदाम, मनके और फारस की खाड़ी की मुहरें यहाँ से पाई गई हैं। लेकिन लोथल, हड़प्पाई सभ्यता में इसलिए महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है कि यहाँ से एक बंदरगाह के

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

लोथल की बंदरगाह

अवशेष मिले हैं। यहाँ से जलीय मार्ग से व्यापार किया जाता था।

हड़प्पा सभ्यता के अंत का रहस्य

लगभग 1700 ई॰ पू॰ हड़प्पा सभ्यता का ह्रास होने लगा था। हड़प्पा सभ्यता का अंत क्यों और कैसे हुआ, अभी तक मालूम नहीं। हड़प्पा सभ्यता के विनाश के लिए विद्वानों ने बहुत से कारण बताए हैं, जैसे—बाढ़ ने शहरों को डुबो दिया, भूमि में नमक की मात्रा एवं बंजरता बढ़ गई, बाहरी लोगों ने हड़प्पावासी पर हमला कर उन्हें समाप्त कर दिया। इसी तरह यह भी कहा गया कि वातावरण में भौतिक—रासायनिक परिवर्तन एवं पारिस्थितकी तंत्र में बदलाव हुआ जिससे लोग सैन्ध्व सभ्यता के स्थलों से दूर जाने के लिए विवश हो गए।

हड़प्पा संस्कृति के बारे में कहा जाता है कि सभ्यता के बड़े—बड़े तत्व का ह्रास जरूर हुआ लेकिन हड़प्पा—संस्कृति के बहुत से तत्वों की निरंतरता आगे विकसित होने वाली ताम्रपाषाणिक संस्कृति में बनी रही। यह संस्कृति राजस्थान में आहड़ संस्कृति, मध्यप्रदेश में मालवा संस्कृति, महाराष्ट्र में इनामगाँव एवं जोर्वे संस्कृति के नाम से जानी गई। आज भी हम मातृदेवी की पूजा एवं धार्मिक क्रियाकलाप करते हैं जिसकी शुरूआत हड़प्पा संस्कृति में हुई

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

थी।

अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(क) निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा कालीन स्थल नहीं है?

(i) मोहनजोदड़ो (ii) कालीबंगा

(iii) लोथल (iv) हस्तिनापुर

(ख) किस शहर से बन्दरगाह के अवशेष मिले है?

(i) लोथल (ii) रापेड़

(iii) कालीबंगा (iv) धौलावीरा

(ग) निम्न में से कौन हड़प्पा सभ्यता की विशेषता नहीं है?

(i) शहरी जीवन (ii) ग्रामीण जीवन

(iii) विदेशों के साथ व्यापार (iv) सुनियोजित नगर निर्माण

(घ) हड़प्पा सभ्यता की खोज किस वर्ष हुई थी?

(i) 1921 (ii) 1925

(iii) 1927 (iv) 1940

(ङ) महास्नानागार किस नगर से प्राप्त हुआ है?

(i) हड़प्पा (ii) लोथल

(iii) मोहनजोदड़ो (iv) कालीबंगा

2. निम्नलिखित को सुमेलित करें :

सोना	—	गुजरात
फिरोजा	—	कर्नाटक
चाँदी	—	मध्य एशिया

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सीपियाँ — ईरान

3. आइए विचार करें :

(i) हड़प्पा सभ्यता के नगरीय जीवन पर प्रकाश डालें।

(ii) हड़प्पा संस्कृति को हड़प्पा सभ्यता क्यों कहा जाता है?

4. आइए चर्चा करें :

(i) किसी समाज का नगरीकरण होने के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है, उन तत्वों की एक सूची बनाइए।

(ii) हड़प्पाई लोग देवी–देवता, पशु आदि की पूजा करते थे, उनकी सूची बनाइए।

(iii) हड़प्पा के लोग जिन फसलों से परिचित थे, उनकी सूची बनाइए उनमें फसलों में से आज आप किन–किन को जानते है।

5. आइए करके देखें :

(i) हड़प्पा शहर जिस तरह बसा हुआ था, उसका एक नक्शा बनाओ और तुम अपने गाँव या शहर का एक नक्शा बनाओ। दोनों नक्शों में समानता और असमानता को चिन्हित करें।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED